इकाई 1 अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का अध्ययन क्यों ? विषय क्षेत्र एवं दृष्टिकोण

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य
1.1 प्रस्तावना
1.2 अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का अर्थ
  1.2.1 अंतर्राष्ट्रीय संबंध एवं अंतर्राष्ट्रीय राजनीति
1.3 अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का बदलता स्वरूप
1.4 अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का अध्ययन क्यों जरूरी है ?
1.5 अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का विषय क्षेत्र
1.6 दृष्टिकोण
  1.6.1 पारंपरिक दृष्टिकोण: यथार्थवाद, आदर्शवाद एवं नव–यथार्थवाद
  1.6.2 वैज्ञानिक दृष्टिकोण
  1.6.3 व्यवस्था सिद्धांत
  1.6.4 खेल सिद्धांत
  1.6.5 समन्वयन सिद्धांत
  1.6.6 पर–निर्भरता दृष्टिकोण
  1.6.7 महिलावादी दृष्टिकोण
1.7 सारांश
1.8 शब्दावली
1.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें
1.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप:

- अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का अर्थ और उनके बदलते स्वरूप को समझ सकेंगे,
- अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन की उपयोगिता जान सकेंगे,
- इसके विषय क्षेत्र को जान सकेंगे,
- अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन के पारंपरिक दृष्टिकोण की पहचान और उनकी व्याख्या कर सकेंगे, तथा
- प्रणाली सिद्धांत एवं खेल सिद्धांत जैसे प्रमुख वैज्ञानिक दृष्टिकोणों को स्पष्ट कर सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

सदियों से राष्ट्रों के बीच के संबंध का अध्ययन विद्वानों को लुभाता रहा है। फिर भी "अंतर्राष्ट्रीय शब्द" का पहला प्रयोग 18वीं सदी में जेरेमी बेंथम द्वारा किया गया। हालांकि इस शब्द का लैटिन समतुल्य **इंटरजेन्टेस** एक शताब्दी पूर्व रिजशार जूश द्वारा प्रचलन में लाया गया था। इन दोनों ने ही इसका प्रथम प्रयोग विधि की उस शाखा के लिए किया था जिसे "राष्ट्रों की विधि" (Law of nations) कहा जाता है। यही बाद में अंतर्राष्ट्रीय विधि के रूप में स्थापित हुआ। 19वीं एवं 20वीं सदी में अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का काफी तेजी से विकास हुआ है। आज राष्ट्र–राज्य एक दूसरे पर काफी निर्भर हो चुके हैं और इसीलिए उनके बीच के संबंध–राजनीतिक या फिर व्यापार और व्यवसाय से संबद्ध–अध्ययन और ज्ञान का अनिवार्य क्षेत्र बन गये है। इस इकाई में हमारा मुख्य